आपने लिखा

संदर्भ अंक-69 के पृष्ठ-55 के फुट नोट-2 'प्रसंगवश 89 के उच्चारण' विषयक एक पहेली भेज रहा हूँ:

एक बूढ़ा व्यक्ति, एक बच्ची और एक बकरी के साथ जा रहा था। सामने से आते हुए एक युवक ने उससे पूछा कि आपकी आयु कितने वर्ष की है? इस लड़की से आपका क्या सम्बन्ध है? तथा बकरी की कीमत कितने रुपए है?

बूढ़े व्यक्ति ने तीनों का उत्तर एक शब्द में ही दिया: 'नवासी'

बूढ़े की आयु - नवासी वर्ष
बच्ची से रिश्ता - नवासी
बकरी की कीमत - नवासी रुपए

संदर्भ में सवालीराम बन्द क्यों हो गया? कृपया पुनः प्रारम्भ करें तथा मेरे सवाल हैं:

1. संसद का उच्च सदन राज्य सभा एक स्थाई सदन है। सन् 1950 में इसका प्रारम्भ किस प्रकार हुआ? क्या शुरू में 250 निर्वाचित होने के बाद प्रति 2 वर्ष बाद 1/3 निवृत होते गए और पुनः 1/3 निर्वाचित होते गए? कृपया स्पष्ट करें।
2. किसी सदस्य की मृत्यु के कारण राज्य से उस सीट का उप-चुनाव किस प्रकार होता है?

एस. श्रीनिवासन के लेख 'क्यों, क्यों, क्यों, ऐसा ही क्यों' में लिटिल एंडियन, मिडिल एंडियन तथा बिग एंडियन, ये नई जानकारियाँ मिलीं।

स्वयं प्रकाश चन्द्रवाल
इन्दौर, म.प्र.

अंक 68 में पी.सी. वैद्य के बारे में प्रकाशित लेख में दो कमियाँ थीं। प्रोफेसर पी.सी. वैद्य गुजरात पब्लिक सर्विस कमिशन के चेयरमैन भी रह चुके थे। उनके कार्यकाल में जितने भी अधिकारियों का चयन हुआ उन सब ने ही प्रो. पी.सी. वैद्य को देखते हुए होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम (होविशिका) की तर्ज पर गुजरात में हमारे द्वारा विकसित 'अविशिका' को हर सम्भव सहायता दी थी। दूसरा पी.सी. वैद्य साहब गांधी विद्यापीठ, वेड़छी, सूरत के कुलाधिपति थे। उसी वजह से गांधी विद्यापीठ के माध्यम से 'अविशिका' प्रोजेक्ट पाँच वर्ष तक चल सका।

अंक 70 में पी.सी. वैद्य के संस्मरण 'शोध का प्रथम रोमांच' पढ़कर बहुत खुशी हुई। राजेश खिंदरी ने गुजराती से हिन्दी में अनुवाद बहुत ही सुन्दरता और सहजता से किया है।

इसी अंक में लेख 'किस्सा एक पहेली का' में पूछे गए दूसरे सवाल का जवाबः

दूसरा सवालः कुछ तोते उड़कर कहीं जा रहे थे। पेड़ पर बैठे एक तोते ने उनसे पूछा तुम कितने तोते हो। उनमें से एक तोता बोला डेवढ़े (डेढ़ गुना) तोते आगे उड़ गए हैं और हमसे दुगने पीछे उड़कर आ रहे हैं। यदि तुम भी हमारे साथ शामिल हो जाओ तो हम कुल 100 तोते हो जाएँगे।

मानो कि दो तोते उड़ रहे हैं। तब तीन आगे उड़ गए और चार पीछे आने हैं। सब मिलाकर नौ हुए। सही मायने में 100 - 1 = 99 तोते उड़ रहे थे। इसलिए (2 x 11 = 22 उड़ते तोते) + (3 x 11 = 33 आगे

उड़ गए) + (4 x 11 = 44 पीछे आने हैं)।
इस तरह, 22 + 33 + 44 = 99 + पेड़ पर बैठा 1 तोता = 100 तोते।

बीज गणित द्वारा: मानो y तोते उड़ रहे हैं। 1.5y तोते आगे उड़ गए। 2y तोते पीछे आ रहे हैं।
y + 1.5y + 2y + 1 = 100
इसलिए 4.5y = 100 - 1 = 99
इसलिए y = 99/4.5 = 990/45 = 22.
अतः उड़ रहे तोतों की संख्या 22 थी।

श्री नामदेव जी ने पहले सवाल का हल जिस तरीके से ढूँढ़ा वह हमें बहुत अच्छा लगा।

इस लेख के माध्यम से एकलव्य की पहल, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र के बारे में जानने को मिला। यदि इस विषय में और जानकारी दी जाती तो और गहरी समझ बन पाती।

वसन्त वडवले
वडोदरा, गुजरात

लेख 'किस्सा एक पहेली का' में पूछे गए दूसरे सवाल का सही जवाब है - 22.

मीता, प्राचार्या, डाइट
पेंड्रा, छत्तीसगढ़

'शिक्षा विमर्श' के विशेषांक में योगदान के लिए आमंत्रण

'अध्यापक' विशेषांक

आम मान्यता है और शिक्षा विमर्श के पाठक के रूप में आप स्वयं भी जानते होंगे - कि शिक्षा में सुधार की कोई भी योजना अध्यापक के सहयोग और उत्साह के बगैर सफल नहीं हो सकती। इस बुनियादी सिद्धान्त के नज़रिए से पिछले दो दशकों के दौरान शुरू की गई सुधार योजनाओं को देखें तो सहज ही कई प्रश्नों से हमारा सामना होता है। इनमें से कुछ प्रश्न इस प्रकार हैं:

1. पिछले दो दशकों में बनाई और शुरू की गई योजनाओं में अध्यापक की भागीदारी किस रूप में अपेक्षित थी? अध्यापक इन योजनाओं के निर्माण में शामिल थे या सिर्फ क्रियान्वयन में?
2. यदि अध्यापक की मुख्य ज़िम्मेदारी इन योजनाओं पर आधारित कार्यक्रम को अंजाम देने की थी तो क्या इस ज़िम्मेदारी का स्वरूप उन्हें स्पष्टतः विदित था? ज़िम्मेदारी को पूरा करने के लिए ज़रूरी प्रशिक्षण कितना उपयोगी रहा?
3. इस अवधि (1990-2010) में अध्यापक की सामाजिक और विभागीय हैसियत में किस तरह के बदलाव आए हैं? इन बदलावों का अध्यापन के पेशे के प्रति आकर्षण पर क्या प्रभाव पड़ा है? अध्यापकों के जीवन की परिस्थितियों में किस प्रकार के परिवर्तन हुए हैं?

ऐसे अनेक अन्य प्रश्न आपके मन में उभरते होंगे। ज़ाहिर है, इन प्रश्नों के उत्तरों में विविधता होगी। प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने वाले अध्यापक और ऊपर की कक्षाओं के अध्यापकों के अनुभव भिन्न होंगे। इसी प्रकार राजस्थान के शिक्षकों के अनुभव उत्तर बिहार या मध्यप्रदेश के शिक्षकों से अलग होंगे। पुरुष शिक्षकों के उत्तरों और महिला शिक्षकों के उत्तरों में भी भिन्नता होगी। युवा शिक्षकों के उत्तर वरिष्ठ शिक्षकों से अलग होंगे।

शिक्षकों के अलावा इन सुधार योजनाओं से जुड़े हुए अधिकारी, कार्यकर्ता व सामाजिक सहयोगी भी पिछले दो दशकों में अध्यापन के पेशे में आए बदलावों से परिचित हैं। ऊपर दिए गए प्रश्नों पर उनकी क्या प्रतिक्रिया है और उनके मन में ऐसे अन्य कौन-से प्रश्न उभरते हैं?

'शिक्षा विमर्श' इस तरह के सभी सवालों की जाँच करने के लिए 'अध्यापक' पर एक विशेषांक प्रकाशित करेगा। इस विशेषांक की सामग्री में स्वयं अध्यापकों द्वारा लिखे गए आलेखों का विशेष स्थान रहेगा।

ये आलेख विवरण, विवेचन या संस्मरण जैसे किसी भी रूप में हो सकते हैं। आलेख की शब्द संख्या 1500 से 2000 शब्दों के बीच रहे तो हम अधिक-से-अधिक अध्यापकों की बात को जगह दे पाएँगे, पर यदि आवश्यक हो तो आप इससे अधिक भी लिख सकते हैं।

सामग्री सुलेख या टंकित रूप में भेजें और यह सुनिश्चित करें कि वह शिक्षा विमर्श के पते पर 15 दिसम्बर, 2010 तक पहुँच जाए। जैसा कि ऊपर संकेत दिया गया है, अध्यापकों के अलावा शैक्षिक कार्यक्रमों से जुड़े अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, सामाजिक सहयोगियों व अन्य नागरिकों के आलेखों का भी स्वागत है।

भेजी गई सामग्री में से प्रकाशन के लिए उपयुक्त आलेख चुनने का अन्तिम अधिकार सम्पादक का होगा। **अतिथि सम्पादक होंगे - प्रो. कृष्ण कुमार।**

संपर्क कीजिए: शिक्षा विमर्श
दिगन्तर, टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियान रोड, जगतपुरा,
जयपुर - 302025, राजस्थान
फोन: 0141 - 2750230, 2750310
ई.मेल: shikshavimarsh@gmail.com